भगवत् कृपा

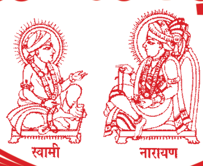

साकार प्रगट ब्रह्म को जो पहचाने, वो परम् को पाये

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली द्विमासिक सत्संग पत्रिका

निजात्मानं ब्रह्मरूपं देहत्रयविलक्षणम्। विभाव्य तेन कर्तव्या भक्तिः कृष्णस्य सर्वदा ॥ शिक्षापत्री, ११६

वर्ष 31 अंक :6	3.12.2008 बुधवार (नवंबर – दिसंबर)	शुल्क – प्रति अंक : 20.00, वार्षिक : 100.00

‘बड़े घर दीवाली शिविर’

रक्षाबंधन, जन्माष्टमी के त्यौहार के बाद मानो ***‘बड़े घर दीवाली शिविर’*** का अनुसंधान यू.पी. – हरियाणा – मुंबई – अमदावाद वगैरह के मुक्तों को शुरु हो जाता है। अब रेलवे टिकट की बुकिंग दो-तीन महीने पहले से यदि नहीं कराई जाए, तो फिर दीवाली के दिनों में तो रिजर्वेशन मिलता ही नहीं। सो, हर साल की तरह अत्यधिक उमंग-उल्लास से मुंबई-अमदावाद के हरिभक्तों ने टिकट का रिजर्वेशन खूब पहले से ही करा दिया!

स्वामी की बातों में है कि–

‘जितनी प्रीति भगवान व संत से हमें है, उससे कई गुना अधिक प्रीति भगवान व संत को हम से है।’

और... सच, प.पू. गुरुजी की आँखों की चमक और अत्यधिक आतुरता से भक्तों के आने के दिन को लगभग रोज याद करते देख कर स्वामी की यह बात खूब प्रमाणित रूप में तादृश होती यहाँ सभी ने महसूस भी करी। आश्चर्य की बात है कि छोटे-छोटे बच्चे भी अपने निजी खेल-कूद की लालच छोड़ कर शिविर में दिल्ली आ जाते हैं। और... प.पू. गुरुजी भी उन छोटे बच्चों की खुशी का ख्याल रखते हुए पटाखे, फूलझड़ियाँ, अनार इत्यादि पहले से मंगवा रख कर दिवाली के दिनों में रोज सायं वो चलवाते और खुद भी बैठते!

सो, दीपावली की मंगल घड़ियों के साथ ‘बड़े घर दीवाली शिविर’ का आगमन यानि– प.पू. गुरुजी के आंतर्हार्द को समझने का साधन!

२४ अक्तुबर का वह शुभ दिन आ पहुँचा, जब अमदावाद-मुंबई के मुक्त शिविर के लिए दिल्ली मंदिर आ गए थे। सायं ७:०० बजे मंदिर में–श्रीजी महाराज एवं सभी गुणातीत स्वरुपों की मूर्तियों के समक्ष सर्वप्रथम स्वामिनारायण धुन से मंगल प्रारंभ हुआ। धुन के बाद प.भ. राकेशभाई ने हिन्दी व गुजराती में भजन गाकर अपनी भक्ति अदा करी और... प.भ. समीरभाई दवे को साथ लेकर दीप प्रज्जवलित करके ‘बड़े घर दीवाली शिविर’ का शुभारंभ करवाया।

दीप प्रज्वलित करते वक्त अजीब प्रसंग बना। प.भ. राकेशभाई और प.भ. समीरभाई जब दीप

प्रज्वलित करने की कोशिश कर रहे थे, तो कई कोशिशों के बावजूद भी दीप प्रज्वलित नहीं हो पा रहे थे। आख़िर अन्य मुक्त साथ में लगे, तब खूब देर से वो प्रज्वलित हुए। यह दृश्य देख कर कईयों के मन में शायद यूं हुआ भी कि क्या इतनी देर लगा दी? परंतु, यह क्यों हुआ – वह प.पू. गुरुजी द्वारा करी निम्न बात से पता चला...

'समीर और राकेशभाई ने दीप प्रगटा कर शिविर का उद्घाटन किया। पार्श्वभूमि में ***'ओरा आवोने धर्मकुमार राखुं मारा नैनामां'*** *जो बज रहा था, वह बहुत अच्छा लग रहा था। भजन तो अच्छा है ही, लेकिन ये जो गा रहे थे, उसका राग अहंविहीन लग रहा था। सांकरदा वाले पू. निष्कामस्वामी के बारे में मैंने बात करी थी कि प.पू. काकाजी कहते कि वो मूर्ति में रह करके भजन गाते हैं। ये भजन जब बज रहा था, तब मैं सोच रहा था कि देर होती रहे तो अच्छा है, भजन सुनने को मिलता रहे। महाराज ने वो अर्ज सुनी। ये लोग जलाते रहे, वो दीप जले ही नहीं; ये लोग जलाते, पर वो बुझ जाते। सो, काफी देर भजन सुनने को मिला। वाकई बहुत अच्छा गाया हुआ है। उसके गाने में 'स्व' का कोई भाव आया हो, ऐसा लगता ही नहीं। बस महाराज की मूर्ति में हमें डूबो दे, ऐसा भजन है...*

इस भजन में ऐसी प्रार्थना करी हुई है कि–

हे धर्मकुमार अर्थात्– श्रीजी महाराज! आप मेरे खूब नज़दीक आइए ताकि आपको मैं अपनी आँखों में बसा लूं।

प.पू. गुरुजी ने इसका मर्म समझाते हुए उदाहरण दिया कि–

आँखों में पीलिया हुआ हो, तो सब पीला नज़र आता है। उसी तरह आँखों में अगर महाराज बस जाएं, तो सब जगह महाराज नज़र आएंगे। बहनों के एक भजन में भी है–

'तमन्ना एक प्रभु, नैनोमां वसी जा तू।'

मानो आतम में तो हो, आँखों में बस जाओ; ताकि हर एक में महाराज नज़र आएंगे...'

अब की बार प.पू. गुरुजी ने **अनुपम मिशन** से प्रकाशित **गुरुवर्य योगीजी महाराज के आशीर्वचनों** की पुस्तक **'परावाणी'** की मानो पारायण रखी थी और... २४ अक्तु. की शाम से त्यागी हो या गृहस्थ, अपनी-अपनी कक्षा पर सभी ने अपने भीतर इंद्रियों-अंतःकरण की धुलाई होती महसूस करी... हर एक को लगा कि हमें हर प्रकार से सुखी करने प.पू. गुरुजी कितने गरजू बने हैं।

२६ अक्तु. की सुबह **'धनतेरस'** की महापूजा का लाभ सभी को मिला... अबकी बार **२८ अक्तु.** दीवाली के दिन **'शारदापूजन'** भी सुबह की महापूजा में किया गया, क्योंकि प.पू. गुरुजी की दिली इच्छा थी कि दस-बारह दिन के लिए सब अपने घर-बार बंद करके आए हैं, तो सभी को 'सायं–सत्संग' का अधिक से अधिक लाभ मिल पाए... यूं, रोज सायं सभा के लिए मंदिर में सब इकट्ठे हो जाते...

दीवाली के दिन **प.भ. वी.के. अग्रवालजी** ने अमदावाद-मुंबई-हरियाणा से आए करीब सौ हरिभक्तों को प.पू. गुरुजी के साथ अपने घर बुला कर दोपहर का भोजन कराया...

दूसरी ओर–मंदिर में तो दूसरे दिन होने वाले अन्नकूटोत्सव की तैयारियाँ खूब जोर-शोर से हो रही थी। एक ओर बहनें–भाभियाँ अन्नकूट के प्रसाद के लिए बनने वाली मिक्स सब्जी के लिए सब्जियाँ काट रही थीं, तो परिसर में सफाई भी हो रही थी और मुख्य द्वार पर फूलों की लड़ियों की सजावट के साथ-साथ ठाकुरजी के हाल में व्यंजन रखने हेतु लगाया

स्टॅन्ड सजाया जा रहा था। चूंकि अन्नकूट के लिए भाभियाँ हमेशा अपने घर से अलग-अलग व्यंजन बना कर भेजती हैं, सो सब्जी काटने के बाद वे सभी सायं अपने घर लौटीं...

और... **२९ अक्तु.** की सुबह **नूतनवर्षाभिनंदन** करते हुए सभी में नवीन उत्साह भर रही थी, जब 'स्वामिनारायण' मंत्र का उच्चारण करते हुए पंक्तिबद्ध सेवकगण रसोई से भोजन-मिष्ठान भरे बर्तन ठाकुरजी के समक्ष रखने ऊपरी हॉल में भेज रहे थे। करीब पौने दस बजे प.पू. गुरुजी से नूतन वर्ष के आशीर्वाद प्राप्त करने सभी 'ताड़देव' के परिसर में एकत्रित होने लगे। अबकी प.पू. गुरुजी ने एक नया जॅस्चर करके नए वर्ष में एक मार्मिक-गहरी सूझ दी। पंडाल के बाहर दो स्वयंसेवक एवं दो स्वयंसेविकाओं को डॅप्युट करवा कर आए हुए भाई-भाभियों की महिमा उजागर करने कंकु से उनका पूजन करवाया!

आज प.पू. गुरुजी के आसन की पृष्ठभूमि पर एक ओर श्रीजी महाराज की मूर्ति थी, तो दूसरी ओर वॉटरमार्क डिज़ाईन में दादा खाचर के दरबार में श्रीजी महाराज के सम्मुख बैठे संतों एवं देश-देशांतर के हरिभक्तों का दृश्य था। उसी पर वच. कारियाणी-१२ की निम्न पंक्तियाँ लिखी थीं –

कैसा ही कामी, क्रोधी, लोभी, लम्फट जीव हो, पर यदि इस प्रकार की बात में भरोसा रखकर प्रीति से सुने, तो उसके सभी विकार टल जाते हैं...

तप्तकृच्छ चांद्रायणादि व्रत करके देह को कोई सुखा भी डाले, तब भी ऐसी भगवद्वार्ता सुनने वाले का मन जैसा निर्विषयी होता है, वैसा उसका होता नहीं है और ऐसी बातें सुनकर ***तुम्हारा सभी का मन जैसा निर्विकल्प होता होगा, वैसा ध्यान करते होंगे या माला फेरते होंगे, तब नहीं होता होगा!***

सो, भरोसा रख कर प्रीति सहित भगवान पुरुषोत्तमनारायण की बातें सुननी; इससे बढ़ कर मन के स्थिर होने और निर्विषयी होने का कोई साधन नहीं है।

सभा में पू. यज्ञप्रियस्वामी, प.भ. समीरभाई दवे, प.भ. ओ.पी. अग्रवालजी, प.भ. मल्कानी अंकल, प.भ. रवि गुप्ताजी के संपर्क से आए श्री हरिशंकर गुप्ताजी और प.भ. विनोदजी (मुंबई) ने नूतन वर्ष में सभी की ओर से आशिष याचना करी और प.पू. गुरुजी ने दीवाली–नूतन वर्ष के कार्ड पर लिखित संदेश को समझाते हुए आशिष प्रदान किए। फिर ठीक पौने बारह बजे प.पू. गुरुजी एवं सभी श्री ठाकुरजी के हॉल में अन्नकूट थाल एवं आरती के लिए गए। आज श्रीजी महाराज हल्के गुलाबी रंग की पाघ एवं खेस धारण करके मोहक स्वरूप में सभी को दर्शन दे रहे थे। दूसरी ओर हॉल के चारों ओर कपड़े से करी सजावट में हस्तलिखित वचनामृत की पंक्तियाँ छपी हुई थी। साथ ही कहीं-कहीं घंटियाँ लगाई हुई थीं, जो हमें ढाई सौ वर्ष पूर्व के माहौल का एहसास करा रही थी। हर बार की भांति बहनों एवं भाभियों ने नीचे स्क्रीन पर ही अन्नकूट आरती के दर्शन किए। तत्पश्चात् सभी ने कढ़ी, चावल एवं मिक्स सब्जी का महाप्रसाद ले करके धन्यता अनुभव करी। सायं ५:०० बजे विभिन्न प्रकार के व्यंजनों का प्रसाद भी उपस्थित मुक्तों को वितरित किया गया। साथ ही बहनों व भाभियों ने अन्नकूट के बर्तन मांझने की महत्त्वपूर्ण सेवा करी। और जैसे कि प.पू. गुरुजी मज़ाक में अकसर कहते हैं कि–'भई! अब घर जाने का क्या लोगे?' यूं रात्रि को करीब ९:०० बजे सभी मुक्त आज की स्मृतियों के साथ अपने निवास लौटे।

अगले दिन ३० अक्तु. भैयादूज की सायं से फिर सभा में 'परावाणी' का लाभ मिलना शुरु हुआ। और... **३ नवंबर–लाभपंचमी** की सायं भी आ पहुँची, जब

पिछले तीन-चार वर्ष से **पू. हंसादादी** के निमंत्रण पर सभी मुक्त गुजरात एपार्टमेन्ट्स के परिसर में प.पू. गुरुजी के आशीर्वाद प्राप्त करते हैं और शिविर की पूर्णाहुति होती है। अब की बार यहाँ प.पू. गुरुजी के आसन की पृष्ठभूमि पर जो दृश्य था, वो न केवल मन मोहक था, अपितु हमें बेमोल क्या प्राप्ति हुई है, उसका हुबहु दर्शन था। एक ओर श्री रामचंद्रजी, सीताजी, लक्ष्मणजी के पास हनुमानजी हाथ जोड़े बैठे दिख रहे थे, तो दूसरी ओर अर्जुन श्री कृष्ण परमात्मा के सम्मुख हाथ जोड़ कर बैठे दिखाई दे रहे थे और... वहाँ लिखा था –

सबसे बड़ी खान – 'भगवान से पहचान';
जैसे अर्जुन की श्री कृष्ण से थी...
हनुमान की श्री राम से थी।

बस इसी एक सूत्र से शिविर की पूर्णाहुति का निचोड़ मिल गया।

और.... प.भ. वच्छराजजी, पू. यज्ञप्रियस्वामी, प.भ. मल्कानी अंकल जैसे मुक्तों के उद्‌बोधन एवं प.पू. गुरुजी की आशिषवर्षा में भीग कर एवं प्रसाद लेकर सभी ने परम धन्यता अनुभव करी... फिर अगला दिन–४ नवंबर तो अमदावाद, मुंबई के मुक्तों की अश्रुओं से भरपूर विदाई का दिन!

इसे देख कर पल-पल एहसास होता है कि सच, धरती पर यदि हमारा कोई सच्चा सगा– प्यार देने वाला–दिलबर–जो भी कहो, वो हमें मिले संत एवं उनका संबंध है... और ऐसे संत से जुड़े मुक्त ही हमारा परिवार है...

✡✡✡

२९ नवंबर,'०८ अन्नकूट – नूतन वर्ष की सभा

पू. मल्कानी अंकल

सबसे पहले–हीज़ होलीनॅस प.पू. गुरुजी को मेरा कन्टीन्युअस थँक्स, मेरा कन्टीन्युअस 'जय स्वामिनारायण'। प.पू. आनंदी माई, बहनों, संतों, सब मंडलों के सत्संगी–सबको दिवाली की मुबारक और जय स्वामिनारायण।

अभी-अभी राकेशभाई ने बोला कि कुछ बात करनी है... आज सुबह की एक बात बताता हूँ। सुबह गुरुजी को रोज 'जय स्वामिनारायण' करते हैं; तो आज भी रोज की तरह– 'गुरुजी' 'जय स्वामिनारायण गुड मार्निंग' कहा। फिर मुंह से बात निकल गई कि गुरुजी इस साल तो कल्याण करवा ही देना। गुरुजी ने जो बात बोली–सौ फीसदी सही कि कल्याण तो हो चुका है; अब कल्याण की क्या बात करनी? अब आगे बढ़ना है।

मैं कभी सोचता हूँ कि **प्रभु ने इतना आसान रास्ता कर दिया है–स्पीरिच्युआलिटी के पीक पर पहुंचने के लिए एक ऐसा–इतना इज़ी तरीका कर दिया है कि मन को विश्वास ही नहीं होता कि ये सही है। अंतर में जानते हैं कि यही सही रास्ता है–जो गुरुजी ने बताया है; आत्मीयता का - फ्रेंडशिप का - फेमिलीभाव का – सत्संगियों से मिलने-जुलने का।** और... सबसे बड़ी बात तो यह है कि **प्रभुधारक संत के चरणों में रहना। चरणों में रहने का अर्थ क्या कि–जो वो बोले वो सत्य है, जो रास्ता वो दिखाए वही करना है।** पर, सब पुरानी किताबें–कथाएं सुन के मन में विश्वास नहीं होता कि इतने आसान

रास्ते से हम लोग सब पहुंच जाएंगे; मगर फॅक्ट ये है कि **गुरुजी ने सबको जो मंत्रजाप सिखाया है, वो इतना पावरफुल - इतना दिव्य - इतना जीवंत है कि अपने गुरु को याद रखकर मन में 'स्वामिनारायण मंत्र' का भजन करें, तो सब काम हो जाने वाले हैं।** इसमें मैं ये समझता हूँ कि **हमारे हक़ में जो होगा, वो तो काम होने वाले ही हैं; गलत काम कोई होगा नहीं – प्रभु होने ही नहीं देंगे।** मेरा ख्याल है – **हजारों टाईम गुरुजी ने ये बात रिपीट की होगी** कि जो आपके हक़ में होगा वो काम जरूर होगा; जो आपके हक़ में नहीं होगा, प्रभु रुकावट डाल देंगे। वो रुकावट को स्वीकार करना हमारा काम है। कॉन्स्टन्ट एन्ड कन्टीन्यूअस भजन करते रहना।

गुरुजी इतने लेवल पर पहुंच गए हैं, मगर फिर भी गुरुजी को कहेंगे कि ये काम है तो वे बोलेंगे – भजन करते हैं। कभी नहीं कहेंगे कि हो जाएगा। वे कर सकते हैं, मगर कभी नहीं कहेंगे। यही कहेंगे – भजन करो - भजन सही उपाय है!

अभी नज़दीक में बहन ने मुझे मालाएं दी थी। मुझे बड़ा शौक था कि रंगीन मालाएं हों। तो निष्ठा बहन ने १३ माला दे दी। मन में ठंडक तो हुई कि हमें इतनी मालाएं मिली हैं, भजन करेंगे। घर गए, दूसरे दिन सुबह उठे पूजा में बैठे, मैंने सारी मालाएं उठाई; सब पर भजन किया। इतना आनंद – इतना आनंद आया! आनंद इस कारण हुआ कि वो महापूजा में रखी हुई थीं और गुरुजी के हाथों से मुझे आईं। सो, नॅचरली भजन करने का उत्साह था, बहुत आनंद हुआ और बहुत मन को ठंडक मिली। पहले-पहले जब हम आए, गुरुजी कहते थे एक घंटा भजन करो – एक महीने का सुबह भजन करो। मगर उस टाईम मैं फेईल गया। आज फ्रँक्ली आप को बताता हूँ कि **जितने जीवन के और आधार थे, प्रभु की कृपा से गुरुजी की कृपा से, पप्पाजी की कृपा से, स्वामिजी की कृपा से वो सब आधार छूट गए। कई बार मन में मैं सोचता हूँ कि ये कैसे मैंने आधार पकड़े हुए थे? कोई जरूरत ही नहीं थी। धी वेस्ट ऑफ टाईम, वेस्ट ऑफ लाईफ।** फिर, **जब से गुरुजी से मिले यहीं लगे हुए हैं; कई साल तो गुजर गए। वो डिले हमारी डिले थी, पहले भी हो सकता था। मगर अब भजन करते हैं – प्रार्थना करते हैं, तो अंतर से आनंद होता है कि प्रभु वो ही करेंगे जो सही है; तकलीफ देंगे तो उपाय भी वही देंगे।** सेवा करवानी है प्रभु को तो, बंदोबस्त खुद ही करेंगे। चाहे हम निमित्त बन जाएं, आप निमित्त बन जाएं। हम लोगों का अभी भी **विश्वास** तो है, मगर **दृढ़ विश्वास** नहीं है...

...इस शिविर के पहले दिन **गुरुजी ने एक बात करी थी कि – विश्वास है कि दिल में तो प्रभु हर टाईम हैं, मगर वो चीज आंखों में नहीं है। जब प्रभु आंखों में बस जाएंगे, तो सब हमारे को प्रभु के जैसे नज़र आएंगे। वो एक ऐसी बात गुरुजी ने की जो मेरे माइंड में फिट हो गई।** भजन ऐसा करें कि – प्रभु! आप दिल में तो हो, मगर आप आंखों में भी बस जाओ, ताकि सब हमें एक सरीखे – प्रभु के जैसे दिखाई दें। अब गुरुजी यहां बैठे हुए हैं, यहां सब – छोटे भी आते हैं, बड़े भी आते हैं – हर प्रकार के लोग आते हैं। पहले मेरे विचार और थे, मैंने बहुत गल्तियां करी हैं; शायद आप लोगों से सबसे ज्यादा। मगर अब मैं

सोचता हूँ, तो सब मेरी सोच-विचार गलत था, सब कॅल्क्युलेशन गलत था। **जितने भी गुरुजी के पास आते हैं – छोटे-बड़े, बहुत बड़े, सेवा करने वाले, नहीं करने वाले – गुरुजी एक नज़र से देखते हैं क्योंकि उनकी आंखों में प्रभु हैं!...**

अन्नकूट कृपाप्रसाद

...खूब एकाग्रचित्त से – जैसे कि यह बात मुझे कर रहे हैं ऐसे समझ कर हम कथा सुनेंगे, तो भले पूरी कथा याद नहीं रहती हो, पर कोई न कोई चीज हमें पकड़ में आ जाएगी; जो लेकर हम चलते रहेंगे तो मंजिल पर पहुंच सकेंगे या मंजिल की दिशा पर जाएंगे। ये जो आंखों वाली बात करी – मैंने कोई नई बात नहीं करी है। सालों पहले **ज्योत की बहनों ने भजन बनाया था – 'आतम में बसा है तू, नैनों में बस जा तू'। काकाजी कहते** थे – **छाती में जहां धबक – धबक होता है, वहां प्रभु हैं ही। ऐसे संत की कृपा से हम में उसका – वो ज्ञान का विस्फोट होता है।** और... **पप्पाजी ने समझाया** था कि **आंखों में पीलिया हुआ हो, तो सारा पीला नज़र आता है; इसी तरह अगर आंखों में प्रभु बस जाएं, तो सब मुक्तों में महाराज नज़र आएंगे।** यह ऑटोमेटिक – अपने आप हो जायेगा। **ये बहुत अच्छी बात अंकल ने पकड़ी।**

...सत्संग में कई प्रकार के – ढंग के मुक्त होते हैं। कोई संत के दर्शन ही करते रहेंगे; उन्हें सेवा वगैरह में चाव नहीं होगा – इनकी वो हॅबिट भी नहीं हो सकती। कईयों को कथावार्ता – कोई आया हो तो उसको समझाना – बात करना; कई ध्यान में ही बैठे रहेंगे, माला फिराते रहेंगे। यूं मुझे दर्शन करते रहना खूब पसंद है। मैंने कई बार बात करी है कि रात-रात को उठ करके बापा सोए होते, वहां मैं दर्शन के लिए पहुंच जाता। रात को एक बजे जाता और सुबह तक बैठा रहता। वहाँ कुछ करता ही नहीं, बापा करवट बदलें – करें वो देखा करता। पर, जब सबको देखता कि ये सब सेवा करते हैं; और नॅचरल है कि जो सेवा करते, उनकी तारीफ खूब होती। तब मन में होता था कि दूसरों की तारीफ होती है, मेरा तो कोई रॅकग्नाइज़ेशन ही नहीं है। तो, मैंने एक बार महंतस्वामी से बात करी कि स्वामी मेरा सेवा करने का अंग नहीं है, मैं ऐसा क्या करूं जो बापा राजी हों? असल में बापा राजी हों वो भीतर में नहीं था, मेरा रॅकग्नाइज़ेशन हो, वो बात थी। पर, महंतस्वामी ने मुझे एक बहुत अच्छी बात कही कि तुम्हें बापा को सेवा से राजी ही करना है न? भले कुछ नहीं कर पाओ, पर सुबह जब पूजा करते हो उस समय अपना तिलक चांदला करने के लिए जो चंदन घिसते हो, वो ज्यादा घिस कर रखना; फिर पास में जो दूसरे पूजा करने बैठे हों और वे चंदन घिसें तो उन्हें कहो – 'ये लो मैं लगा देता हूँ।' यूं ऑफर करके जोगी महाराज के भाव से उन्हें टीका कर देना! आज आपने देखा होगा कि संत और सेवक आप सबको टीका करने आए थे। अब उन्हें सोचना है कि **हमने जो - जो मुक्तों को टीका करा है, उनको काकाजी के भाव से करा था क्या?**

...मैंने थोड़े दिन पहले 'आत्मीयता धन्य बनी' पुस्तक में एक सॅन्टेन्स पढ़ा-जो मुझे बहुत जचाँ! **'यह सत्संग जो है, वो कुछ कर दिखाने का हमारे लिए एक प्लॅटफार्म नहीं है; पर यहां आकर जो बातें सुनते हैं, उस पर चलने का ग्राउन्ड है।'** साधु से सुनी बातों पर हम कितना चलते हैं, उसी पर हमारी प्रगति रहेगी।

...मैं जानता हूँ, आप दिवाली कार्ड भी तो बस ऊपर-ऊपर से पढ़ते हैं। कार्ड पहुंचने के बाद भी फोन आते हैं कि सभा कितने बजे है? अरे! अंदर सारा लिखा हुआ है। इसलिए दिवाली कार्ड जो आपको भेजा है, वही हर साल की तरह आज पढ़ेंगे और उसको समझने की कोशिश करेंगे।

...मैं कई बार कहता हूँ कि छोटे लड़के को भी पूछेंगे कि तू क्या बनेगा? नाई बनेगा या इंजीनियर बनेगा? इंजीनियर कैसे बना जाता है, वह उसको कुछ पता नहीं है। तब भी वो कहेगा इंजीनियर बनूंगा। उसको पूछो कि तू मोची बनेगा या डॉक्टर बनेगा? तो कहेगा – 'डॉक्टर'। यूं हर एक को सुखी होना है – सुख चाहिए; सुख यानि – कम्फर्ट। वो फिज़िकल हो, मेन्टल हो, स्पीरीच्युअल हो और... खास करके ऐसे त्यौहारों के दिन – जो बड़े दिन बोले जाते हैं, उन दिनों हर एक में यह कामना – यह भावना खूब उमड़ आती है कि – 'चलो मंदिर चलें, ठाकुरजी के – सब संतों के आशीर्वाद लें।' आप लोग भी आज क्यों आए हो? हमें भीतर में एक ऐसा विश्वास है कि ऐसे दिन – आज के दिन ठाकुरजी भी फिदा होते हैं। और... बात भी सही है – ऐसे दिन संत लोग भी खुश ही होते हैं कि चलो आज तक जो हुआ वो हुआ, अब हर एक को खुश कर देना है।

पर, हम जो सुख बाहर ढूंढते हैं, वो भगवान के श्रीचरणों में है। हम श्रीचरणों का अर्थ करते हैं 'फीट'(चरण – पांव)। वो तो है ही; लेकिन सूक्ष्म अर्थ यह है कि भगवान के श्रीचरणों में संत रहते हैं, सो **सुख के दाता तो ऐसे संत हैं।** असल में ये कार्ड यह अर्थ बताता है। कई भगवान की मूर्ति के चरणों को धोते रहते हैं। नहीं धोने हैं, वो पूजन नहीं करना है – वो बात नहीं है। लेकिन **भगवान के चरणों में जो संत रहते हैं, इनके साथ का संबंध दृढ़ करेंगे; तब सच्चे सुख के भोक्ता हम बनेंगे।**

सो, '**भगवान के चरणारविंद में**' इसलिए कि वहां ऐसे संत रहते हैं जो भगवान की सेवा में अखंड रत **हैं।** अखंड का मतलब निरंतर – लगातार; हमेशा वहां संत होते ही हैं। इनके आशीर्वाद से हमें सुख मिलेगा। बोलते हैं न? – सच्चे सुख के दाता भगवान और संत हैं। ब्रह्मसूत्र में भी लिखा है - 'आनंदो ब्रह्म' अर्थात् ब्रह्म का लक्षण है – आनंद! इसलिए मैं कहता हूँ – **'साकारब्रह्म' की सन्निधि में या उससे कन्सर्निंग कुछ भी होता होगा, भीतर में आनंद प्रगट हो जाएगा।** यह 'ब्रह्म' का लक्षण है। उसको याद करो – उसकी बातें सुनो – उसके दर्शन करो – बिना कुछ करे ही भीतर में आनंद प्रगट हो ही जायेगा – आनंद के फुव्वारे फूटते ही जाएंगे। **ऐसे संत ब्रह्मस्वरूप हैं।**

...योगीजी महाराज ने कमाल यह किया है कि काकाजी, पप्पाजी, स्वामिजी जैसे – ऐसे संतों की हमें पहचान करा दी। इनकी सेरेछाया में आपसी एकता से जीते – परिवार की भावना से जीते मुक्तों का एक समाज - '**गुणातीत समाज**' अस्तित्व में आया।

अभी किसी ने बात करी और मैं भी कई बार कहता हूँ कि यहां जो आते हैं उनमें मोर थॅन एईटी फाइव परसेंट एक दूसरे को खूब करीब से पहचानते होंगे। पास बैठे किसी को पूछना नहीं पड़ता कि आप कौन हो – कहां रहते हो? थोड़े बहुत – १०-१५ परसेंट अनजाने होंगे और... आगे जाकर इनकी गिनती भी इनमें आ जाएगी। और कहीं पर आप जाओगे – भीड़ खूब होगी, लेकिन एक-दूसरे से एटेच्ड या कन्सर्न्ड नज़र नहीं आयेगा। **काकाजी ने यहाँ कहा था कि अगर मैं चाहूं तो दर्शनार्थियों की यहां से मेरठ तक की लाईन**

लगा दूं। आपने तो झण्डेवालान की लाईन देखी है। सो, काकाजी ने जो बात करी, उस पर विचार तो करो – यहां से मेरठ तक की लाईन! वे ऐसा कर सकते थे। वे ब्लफ करने वाले नहीं थे। पढ़े-लिखे खूब समझदार – खूब तगड़ा बिजनेस करी हुई व्यक्ति थे। वो जब ऐसी बात करें, तो मैं इसको अलग ढंग से देखता हूँ। ओहो! **काकाजी को हम लोगों के साथ कितना लगाव होगा? वर्ना ऐसा करके वे अपनी कितनी वाहवाही करवा लेते? 'क्या संत है? बहुत बड़ा साधु – बहुत बड़ा साधु!'** लेकिन वे फिर हमारे भाग नहीं रहते न? वे तो बोलते थे कि अगर मैं ये कर दूं, तो तुम्हारे हाथ नहीं आऊंगा! देखो, हमारे लिए इन्होंने अपनी सारी एक्टिविटीज़ भी एक तरफ रख दी कि नहीं?

हम कई बात बोलते हैं, पर उसका मर्म समझते ही नहीं हैं। **हम मानते हैं कि हमें भगवान और संत के साथ लगाव है। लेकिन असल में तो भगवान और संत को हमारे साथ खूब लगाव है। भागवत का एक प्रसंग है कि किसी कारण इन्द्र कृष्ण भगवान पर राजी हो गए और उस खुशी में उन्होंने कहा – प्रभु आप मुझ से कुछ मांगो। तो, भगवान ने मांगा कि – 'अगर आप मेरे पर खुश हुए हो तो आज ऐसा वर दो कि अर्जुन के प्रति मेरा जो प्यार है वो कभी कम न हो, पर बढ़ता रहे।'** देखो, जो अर्जुन को मांगना चाहिए कि प्रभु के साथ का मेरा प्यार बढ़ता रहे, उसके बजाय प्रभु कहते हैं कि अर्जुन के प्रति मेरा जो प्यार है वो बढ़ता रहे – कम न हो ऐसे आशीर्वाद दो। **ऐसी काकाजी की ये बात है। पप्पाजी** क्या **बोलते** थे? **'मेरी दुनिया बहुत छोटी है' – मतलब धाम, धामी और मुक्तों से कन्सर्न्ड – वही इनकी दुनिया थी।** दूसरों के साथ उन्हें कोई कन्सर्न नहीं... मल्कानी अंकल इतने साल से विद्यानगर जाते हैं, पप्पाजी के पास जाते थे; लेकिन धाम, धामी और मुक्त – खूब अपनेपन से जुड़े भगवान के भक्तों के सिवा इन्होंने किसी को वहां देखा नहीं होगा। आत्मबुद्धि और प्रीति से जुड़ा हुआ समाज ही वहां देखा होगा। और... वहां भी हर कोई जानता है कि ये **'हमारे मल्कानी अंकल'** आए हैं। 'कोई नए आए हैं' – ऐसा नहीं मानते। **'आत्मबुद्धि और प्रीति' – वही सच्चा सत्संग है।** ऐसे **कुटुंबभाव से जीते हुए भक्तों का समुदाय – ऐसे सेन्टीमेन्ट्स से जुड़े हुए भक्तों के एक समाज का सर्जन ही सच्चा सत्संग है।** ऐसे सत्संग में हम भी ऐसी ही भावना से जुड़ जाएं। तप, व्रत, योग, दान – वो सब ठीक है; नहीं करना है ऐसा नहीं है। लेकिन –

भगवान के भक्तों में आत्मबुद्धि और प्रीति – कुटुंबभाव - अपनापन वही सच्चा 'सत्संग' है।

सो, **सत्संग का लक्षण यही है कि स्वरूपलक्षी – संतलक्षी आत्मीयता जहां नज़र आए – वहीं सच्चा सत्संग है।**

ब्रह्मस्वरूप संत के आश्रय में 'वसुधैव कुटुंबकम्' की भावना को उजागर करे वही 'सत्संग' है।

'वसुधैव कुटुंबकम्' की भावना भी अगर ऐसे संत का आश्रय होगा – संत की सेरेछाया होगी, तभी उजागर होगी। यहाँ कॉम्यूनिज़म वाली बात आई। हम नये - नये (सत्संग में) आये थे, तब पप्पाजी बोलते थे – स्वामिनारायण संप्रदाय क्या है? **'स्वामिनारायण संप्रदाय' मतलब – कॉम्यूनिज़म प्लस गॉड।** प्रभु को बाजू पर रखकर साम्यवाद की कोई कल्पना करे, वो कामयाब हो ही नहीं सकता। रशिया ने ऐसे कॉम्यूनिज़म की बात करी थी न? लेकिन वो फॅइलयॉर गया। और यहां मतलब – अपने **गुणातीत समाज में जो भी आते हैं, वे बोलते हैं – 'भई, ऐसा समाज हमने नहीं देखा, यहां कुछ अलग चीज है।' वो क्या कि भगवान और संत की सेरेछाया में एक - दूसरों से खूब जुड़ा हुआ आत्मीय समाज तैयार हुआ है।**

कोई अमदाबाद रहते हैं, पंजाब रहते हैं, मुंबई में रहते हैं, विदेश में रहते हैं – लेकिन हमारी एक एक्स्टॅन्डॅड फॅमिली है। देखो, दिवाली मनाने के लिए अपने-अपने घर पर ताले लगाकर यहाँ दस-पन्द्रह-बारह दिन के लिए आ जाते हैं। रोज रात को नौ-दस बजे मुझे पूछना पड़ेगा कि – 'आप जाने का क्या लोगे?' ये भी कहेंगे कि – 'आईसक्रीम खिला दो, फिर चले जाएंगे।' ऐसा एक **संयुक्त परिवार अस्तित्व में आया है; उसका हमें सदस्य बनने का काकाजी ने मौका दिया है। वह है – 'गुणातीत समाज'!**

ब्रह्मस्वरूप काकाजी कहते – 'सभी वेदों व शांति पाठों व उपनिषदों का मूल रहस्य दिव्य एकता है।' प्रभु और संत के साथ – इनके संबंध वाले मुक्तों के साथ ऐसी एकता करें – तो, सुख-शांति और आनंद की जो बातें सुनते हैं, वो हम महसूस करने लग जाएंगे।

'संप, सुहृदभाव और एकता' – यह हम कई सालों से बोलते रहते हैं। प.पू. काकाजी कहते थे – तोते की तरह बोलेंगे, लेकिन शब्द का मर्म समझना चाहिए। उन्हीं के शब्दों में –

'संप' का मतलब क्या कि – ***भले! हमारे विचार अलग हों, सोच अलग हो, नॅचर अलग हो; फिर भी भगवान और संत को राजी करने के लिए मिलजुल के काम करें वो – 'संप'।***

अभी समीर ने बात करी कि वो कहता था कि – कॅन्ट नहीं उतरना है, नहीं उतरा जायेगा; नई दिल्ली उतरें। फिर भी **भगवान और संत को राजी करने के लिए** सब के साथ मिलजुल कर **केन्ट उतर गए वो – 'संप'।**

इससे आगे **'सुहृद्भाव'**! ***साथी मुक्त कोई भूल कर देता हो या वो अड़ के ही बैठ जाए, साथ न दे; तब उसकी वो बात, कि 'इसने मुझे साथ नहीं दिया', वो रजिस्टर करे बिना हम भगवान और संत को राजी करने के लिए उसी के साथ मिलजुल के काम करें वो – 'सुहृद्भाव'।***

संप और सुहृद्भाव के मिनींग में फर्क पड़ा न? कि – साथी मित्र अड़ के बैठ जाए, गल्तियां करता रहे, तुम्हें दौड़ाभागी करनी पड़े और वो साथ नहीं दे। वो सारा नोट करे बिना तुम कर लो और फिर भी उसके साथ मिलजुल के काम करते रहो, क्योंकि मुझे तो मेरे स्वामी को राजी करना है – वो **'सुहृद्भाव'।**

और... **'एकता'**! ***'उसने जो गलती करी, वो गलती मेरी है' – यूं उसकी गलती को अपने पर लेकर के उस मुक्त को राजी करने – किसको? वो मुक्त को – स्वरूप को नहीं, संत को नहीं; उसी मुक्त को राजी करके भगवान और संत की हम प्रसन्नता लूट लें वो – 'एकता'।***

तो, ऐसे संप, सुहृद्भाव और एकता से काम करते मुक्तों के समाज में जीने का हमें चान्स मिला है।

और... काकाजी कहते थे न कि ऐसे जीते रहेंगे, तो हमारे लिए तो हर रोज दिवाली और हर रोज नया साल। पर, एक बार यह परख लें कि हम कहीं गलत जगह पर तो नहीं बैठे हैं। फिर तो – **संप, सुहृद्भाव, एकता से – कुटुंबभावना से जीना** शुरू कर देना – इसी के लिए **ये सत्संग है और ये करेंगे तो अक्षरधाम का सुख, शांति और आनंद पाने के लिए प्रार्थना नहीं करनी पड़ेगी। अपने आप हमारे घर पर उसके गाड़े छूटेंगे...**

– प.पू. गुरुजी

(ध्वनिमुद्रण से संकलित)

✡✡✡

भजन

(राग – एक तेरा साथ हमको दो जहाँ से प्यारा है...)

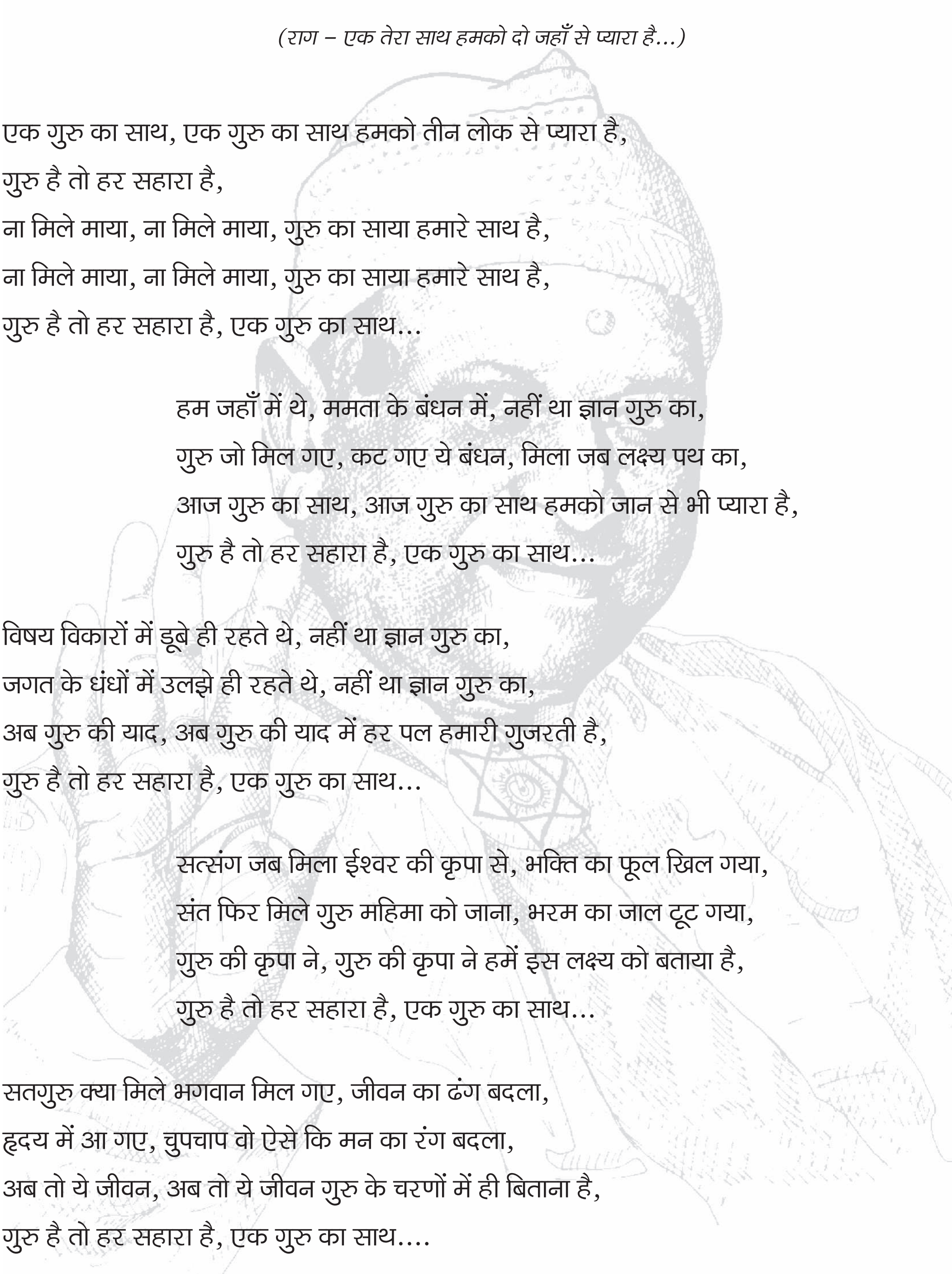

एक गुरु का साथ, एक गुरु का साथ हमको तीन लोक से प्यारा है,
गुरु है तो हर सहारा है,
ना मिले माया, ना मिले माया, गुरु का साया हमारे साथ है,
ना मिले माया, ना मिले माया, गुरु का साया हमारे साथ है,
गुरु है तो हर सहारा है, एक गुरु का साथ...

हम जहाँ में थे, ममता के बंधन में, नहीं था ज्ञान गुरु का,
गुरु जो मिल गए, कट गए ये बंधन, मिला जब लक्ष्य पथ का,
आज गुरु का साथ, आज गुरु का साथ हमको जान से भी प्यारा है,
गुरु है तो हर सहारा है, एक गुरु का साथ...

विषय विकारों में डूबे ही रहते थे, नहीं था ज्ञान गुरु का,
जगत के धंधों में उलझे ही रहते थे, नहीं था ज्ञान गुरु का,
अब गुरु की याद, अब गुरु की याद में हर पल हमारी गुजरती है,
गुरु है तो हर सहारा है, एक गुरु का साथ...

सत्संग जब मिला ईश्वर की कृपा से, भक्ति का फूल खिल गया,
संत फिर मिले गुरु महिमा को जाना, भरम का जाल टूट गया,
गुरु की कृपा ने, गुरु की कृपा ने हमें इस लक्ष्य को बताया है,
गुरु है तो हर सहारा है, एक गुरु का साथ...

सतगुरु क्या मिले भगवान मिल गए, जीवन का ढंग बदला,
हृदय में आ गए, चुपचाप वो ऐसे कि मन का रंग बदला,
अब तो ये जीवन, अब तो ये जीवन गुरु के चरणों में ही बिताना है,
गुरु है तो हर सहारा है, एक गुरु का साथ....

✡✡✡

भजन

(राग – सुनो, सुनो अतिथिगण...)

जय परब्रह्म, जय अक्षरब्रह्म, जय अक्षरमुक्त...
गुणातीत संत की, गुणातीत संत की परंपरा से गुरुजी हमने पाए हैं,
काकाजी ने जिनको, काकाजी ने जिनको, दिल्ली भेज के हमरे भाग्य जगाए हैं,
गुणातीत संत की...

महाराज अपने संग अक्षरब्रह्म को लाए,
स्वामी गुणातीत श्रीजी का स्वरूप समझाएं,
वारिस जागास्वामी, अदाश्री, भगतजी बनाए,
गुणातीत की महिमा जो शास्त्रीजी को बताएं,
अक्षरपुरुषोत्तम, अक्षरपुरुषोत्तम, बोचासण के मंदिर में पधराए रहे;
शुद्ध युगल उपासना, शुद्ध युगल उपासना का सत्संग वो सबको दृढ़ कराए रहे,
गुणातीत संत की...
शास्त्रीजी ने स्थावर मंदिर बनवाए,
योगीजी ने कई जंगम तीर्थ बनाए,
साक्षात्कार योगीजी ने काका को कराया,
काका, पप्पा, प्रगट स्वरूपों ने समाज रचाया,
है ज्योत से ज्योत, है ज्योत से ज्योत, यूं प्रगट संत से हमने प्रभु ही पाए हैं;
गुणातीत संत की, गुणातीत संत की परंपरा से गुरुजी हमने पाए हैं,
काकाजी ने जिनको -२, दिल्ली भेज के, हमरे भाग्य जगाए हैं,
गुणातीत संत की...

(राग – राजीव नयन को, स्वतः चयन...)

काकाजी के सेवक, गुरुजी को अपने, जीवन में बसाएं -२
काकाजी के नक्शेकदमों पर तेरी तरह चल पाएं, आत्मसात् कर पाएं;
काकाजी के सेवक, गुरुजी को अपने, जीवन में बसाएं -२

(राग – अद्भुत है महिमा, दो अक्षर के नाम की...)

प्रगट का कायदा, जीवन का आधार बने -२
'ब्रह्माग्नि' से बचें, किसी के हम काज़ी ना बनें -२
मुक्त हैं उत्तर में भिजवाए, अक्षरधाम से आपको लाए,
हैं ब्रह्म की मूर्ति मुक्त सभी हम मान लें -२
एक कुटुंबभाव हम सत्संग में साकार करें,
प्रगट का कायदा, जीवन का आधार बने
जय मुक्ताक्षर पुरुषोत्तम, जय मुक्ताक्षर पुरुषोत्तम,
मुक्ताक्षर पुरुषोत्तम की जय जय -२।।

❑

आया, आत्मीय अमृत महोत्सव!

अहो! हम सभी के जीवन में अविस्मरणीय दर्शन का मौका आया है जब –

नए वर्ष के प्रारंभ में ही वडोदरा की धरती पर

प्रगट ब्रह्मस्वरूप परम पूज्य हरिप्रसादस्वामिजी का

७५वाँ प्राकट्य दिन 'आत्मीय अमृत महोत्सव' के रूप में मनाया जाएगा।

स्थलः महाराजा सयाजीराव गायकवाड़ पॅलॅस ग्राउंड, वडोदरा, गुजरात

तो आइए, १, २, ३ एवं ४ जनवरी'०९ के मंगलकारी दिन

हम सभी अद्‌भुत दर्शन, समागम व आशिष प्राप्त करके, जीवन में धन्यता अनुभव करें।

जानकारी हेतु :

४ जनवरी '०९, रविवार–सुबह ९:०० से १:३०

'आत्मीय अमृत महोत्सव' की मुख्य सभा का आयोजन किया गया है...

व्रतोत्सवसूची

(1) दि. 9.12.'08, मंगलवार – एकादशी–व्रत

(2) दि. 15.12.'08, सोमवार – धनुर्मास प्रारंभ

(3) दि. 23.12.'08, मंगलवार – एकादशी–व्रत,

(4) दि. 31.12.'08, बुधवार – 2009–नए वर्ष के उपलक्ष्य में
दिल्ली–ताड़देव मंदिर में रात्रि 9:45 से 'मध्यरात्रि महापूजा'

(5) दि. 7.1.2009, बुधवार – एकादशी–व्रत

(6) दि. 11.1.'09, रविवार – **पौषी पूर्णिमा,**
मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामिजी का दीक्षा दिन

(7) दि. 13.1.'09, मंगलवार– लोहड़ी, प.पू. दीदी का प्राकट्य दिन

(8) दि. 14.1.'09, बुधवार – मकरसंक्रांति, धनुर्मास समाप्त, भिक्षा दिन

(9) दि. 21.1.'09, बुधवार – एकादशी–व्रत
ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज का स्वधामगमन दिन

R.N.I. 28971/ 77 (Air Mail)

'**Bhagwatkripa**' Bimonthly Magazine – Despatched on 15th of alternate months

If undelivered please return to :— *Printer, Publisher, Editor :* **SHRI PRABHAKER RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY- DELHI**

***'Taad-dev'*,** Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 2730 1327

Printed at : **D.K. FINE ART PRESS (P) LTD.,** A 6, Community Centre, Nimri Colony, DELHI-110 052